IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

'अन्धा युग' की वर्तमान युग में प्रासंगिकता

शोध निर्देशक-डॉ.क्षिप्रा द्विवेदी

(सहायक प्राध्यापक हिंदी)

शोध छात्रा-स्वाति शर्मा

एम.फिल.(II)सेमेस्टर

शा.ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय

रीवा,(म.प्र.)

सारांश

हिंसा सदैव विनाश का कारण बनती है। हिंसा से तात्कालिक रूप से समस्या का समाधान तो मिल सकता है परंतु यह हिंसा कभी सृजनात्मक नहीं हो सकती। इसमें रचनात्मकता का सर्वथा अभाव रहता है। यही आभाव धर्मवीर भारती ने अंधा युग में वर्णित किया है। अपने सगे संबंधियों से युद्ध के पश्चात पांडवों को यह अनुभव होता है कि जो हस्तिनापुर पहले खुशियों से गुलजार रहता था वह अब खाली खंडहर की भांति भयभीत करता है। शस्त्रों को एकत्रित करने की होड़ व उनके प्रयोग किये जाने पर होने वाले विनाश का भय निरंतर बना रहता है। युद्ध महाभारत का हो अथवा वर्तमान के आर्मेनिया और अजरबैजान या सीरिया का क्षति दोनों ही पक्षों को होती है। अतः मानव मूल्यों को अपनाकर ऐसे विनाश से बचा जा सकता है। इसके लिए स्व-हित के स्थान पर परहित को अंगीकार करना होगा।

बीज शब्द- अंधा युग, सत्ता लोलुपता, मानव मूल्य, परहित

साहित्य मानव जीवन में सभ्यताओं की प्रगति का प्रतीक है। साहित्य ने समाज में अपना स्थान अपरिहार्य बना रखा है। यह समाज में मूल्यों एवं सभ्यता का विस्तार करने में सहायक है। इसी संदर्भ में धर्मवीर भारती ने 'अंधायुग' की रचना की जो प्रथम दृष्टया तो महाभारत के प्रसंगों की रचना लगती है किंतु जब उस समय के देशकाल एवं वातावरण का अध्ययन किया जाता है तो यह प्रतीत होता है कि यह रचना भूत में हुई घटनाओं एवं उनसे हुई भीषण अपूर्ण क्षति को रेखांकित करती वर्तमान की समस्याएं हैं। 'अंधायुग' महाभारत के 18वें दिन से भगवान कृष्ण की मृत्यु तक की कथा है। इसमें 5 अंक हैं प्रारंभ 'स्थापना' से एवं समापन 'प्रभु की मृत्यु' नामक अध्याय से होता है मध्य में तीसरे अंक के बाद अंतराल आता है जिसका नाम 'पंख, पहिए और पट्टियां' हैं। धर्मवीर भारती ने भूत में हुई गलतियों को दोहराने पर होने वाले दुष्परिणामों के प्रति सचेत किया है।

बदलता वैश्विक परिदृश्य जिसे विकास का पर्याय माना जाता है, जिसमें नैतिक मूल्यों एवं सामाजिक मूल्यों के लिए प्रायः कम स्थान दिखाई देता है, भारती जी के दृष्टि में यह मनुष्य का अंधे युग की ओर अग्रसर होना है। मानवीय मूल्यों का तेजी से गिरता स्तर, मानव चरित्र में हीनता का समावेश, मानव द्वारा तोड़ी जाने वाली सीमाएं उसे एक विनाश की ओर ढकेल रही हैं। समाज में व्यक्तिगत स्वार्थ, मोह, लोभ आदि से प्रभावित होकर मनुष्य अंध लोक की ओर बढ़ रहा है। इस अंधे युग से सर्वसाधारण का जीना दुष्कर हो जाएगा। भारती जी ने इस संबंध में 'अंधायुग' की स्थापना में अपनी आशंका व्यक्त की है-

'राज शक्तियां लोलुप होंगी,
जनता उन से पीड़ित होकर,
गहन गुफाओं में छिप-छिप कर दिन काटेगी।'[1]
(गहन गुफाएं वे सचमुच की या अपने कुंठित अंतर की)

हिंदी साहित्य में पौराणिक कथाओं को लेकर कई रचनाएं लिखी गई हैं। इसी कड़ी को आगे बढ़ाते हुए डॉ धर्मवीर भारती ने भी 'अंधायुग' की रचना की। बच्चन सिंह ने अंधायुग के पूर्व में लिखे गए गीतिनाट्य को एकांकी गीतिनाट्य कहा एवं अंधायुग को पूर्ण गीतिनाट्य माना है। डॉ. धर्मवीर भारती समकालीनता और साहित्य के आपसी संबंध को स्पष्ट करते हैं और मानते हैं कि 'किसी भी युग का अच्छा साहित्यकार अपनी समकालीन समस्याओं और चुनौतियों से दूर नहीं रह सकता है।'[2] प्रत्येक साहित्यकार को तात्कालिक समय में व्याप्त प्रश्नों से रूबरू होना चाहिए और इन प्रश्नों के उत्तर उसे समाज के अध्ययन से ही प्राप्त होते हैं। ऐसा करने से लेखक एक उच्च कोटि की रचना करने में सफल होता है।

इसमें तनिक भी संदेह नहीं है कि युद्ध का ऐलान होने के बाद सत्य अथवा धर्म किसी भी पक्ष में स्थिर नहीं रह पाते। 'अंधी प्रवृत्तियों से परिचालित मानव अपने अंदर के मनुष्यत्व को कहीं खो देता है और उसके समक्ष कोई मानदंड नहीं रहता है। आधुनिक बोध के परिप्रेक्ष्य में 'अंधायुग' का यह प्रतिपाद्य भी हो सकता है जिसके अनुसार किसी भी युद्ध में सत्य का पक्ष पहले खंडित होता है। कराहते हुए घायल सत्य को रौंद दिया जाता है और संपूर्ण मर्यादाएं, नैतिक मान्यताएं टुकड़ों में बंट कर छटपटाने लगती हैं।'[3] अंधी संचालित प्रवृत्तियों को गांधारी द्वारा व्यक्त किया गया है-

'मैंने कहा था दुर्योधन से
धर्म जिधर होगा ओ मूर्ख
उधर जय होगी
धर्म किसी ओर नहीं था लेकिन
सभी थे अंधी प्रवृत्तियों से परिचालित।'[4]

धर्मवीर भारती जी ने मुख्य कथा को तोड़ा मरोड़ा नहीं है। 'अंधायुग' में आधुनिक प्रसंग का उल्लेख भारती जी द्वारा नहीं किया गया फिर भी यह पंक्तियां वर्तमान समाज की स्थिति को भलीभांति वर्णित करती हैं-

'टुकड़े-टुकड़े हो बिखर चुकी मर्यादा,
उनको दोनों ही पक्षों ने तोड़ा है।'[5]

21 वीं सदी में 'अंधायुग' की कथावस्तु की बात की जाए तो आज का अंधत्व आने वाली पीढ़ियों के लिए कलुषित धब्बे की भांति होगा, जो समय-समय पर यह याद दिलाता रहेगा कि इतिहास अनगिनत मनुष्यों एवं निर्दोष लोगों के रक्त से लिखा गया है। एशिया के ही दो देश अजरबैजान और आर्मेनिया जो अपने भौगोलिक क्षेत्र को लेकर आपस में लड़ रहे हैं। आधुनिक समय में युद्ध धनुष बाण से नहीं बंदूकों और तोपों से किए जा रहे हैं जो प्राचीन युद्ध पद्धति से अत्यधिक घातक हैं। इन युद्धों में युद्ध, क्षेत्र विशेष तक सीमित नहीं रह कर पूरे देश को ही युद्ध क्षेत्र मान लिया जाता है जिसका खामियाजा आम नागरिक, स्त्रियों और बच्चों को भी भुगतना पड़ता है। आर्मेनिया और अजरबैजान के युद्ध में भी ज्यादा क्षति आम नागरिकों को हुई है। दैनिक भास्कर की एक रिपोर्ट के अनुसार सीरिया में हुए शीत युद्ध में 'विश्व स्वास्थ्य संगठन की रिपोर्ट के मुताबिक गृह युद्ध के कारण सीरिया में पिछले 10 साल में 3.80 लाख से ज्यादा जानें जा चुकी हैं। इनमें 22 हजार बच्चे एवं 13,612 महिलाएं भी शामिल हैं।'[6]

अंधत्व के पनपने की जड़ व्यक्तिगत स्वार्थ एवं सत्ता पाने की लोलुपता है। यही लोलुपता मनुष्य को गहरी अंधकार युक्त खाई में धकेल देती है जिसका आभास सब कुछ नष्ट होने के बाद होता है। रामधारी सिंह दिनकर ने 'रश्मिरथी' में लिखा है-

'जब नाश मनुज पर छाता है,
पहले विवेक मर जाता है।'[7]

हिंदी साहित्य में पौराणिक कथानक के प्रयोग करने का उद्देश्य धर्म विशेष का प्रचार करना नहीं अपितु अतीत की घटनाओं का विश्लेषण कर वर्तमान समाज को आगाह करना है। 'अंधायुग किसी विशिष्ट स्थिति अथवा युग विशेष का द्योतक ना होकर अतीत, वर्तमान और भविष्य को एक साथ अपने में समाए हुए है। अतः कुंठा, हताशा, रक्तपात, घृणा, प्रतिशोध, विकृत, संत्रास, भय, मूलहीनता, कुरूपता और विध्वंस के अंधकार का संगत और सार्थक बिंब और प्रतीक है 'अंधायुग'।'[8]

'अंधायुग प्रकाश की कथा है जो अंधों के माध्यम से कही गई है। उसका विषय वस्तु है कि 'विवेक', 'मर्यादा', 'सापेक्ष' और 'अर्धसत्य' की अन्वेषण-प्रवृत्ति। जिस युग में अश्वत्थामा और युयुत्स दोनों की विक्षिप्तता हो उसकी कथा में विवेक ही प्रकाश दे सकता है।'[9] ऐसा ही विवेक युधिष्ठिर को भी युद्ध के उपरांत आता है। युधिष्ठिर को युद्ध जीतने के पश्चात भी शांति नहीं मिल रही है

'ऐसे भयानक महायुद्ध को

अर्थ सत्य, रक्तपात, हिंसा से जीतकर

अपने को हारा हुआ अनुभव करना

यह भी यातना ही है।'[10]

युद्ध किसी न किसी अंधत्व से प्रेरित होता है और इस अंधेपन का शिकार कोई और नहीं युद्ध प्रस्तोता के सगे संबंधी और देशवासी ही होते हैं। दैनिक भास्कर में संपादकीय में प्रकाशित भारतीय विदेश नीति परिषद के अध्यक्ष डॉ. वेद प्रताप वैदिक के अनुसार 'फिलिस्तीन, हमास एवं इज़राइल के संयुक्त 11 दिवसीय युद्ध में हमास ने इज़राइल पर चार हजार रॉकेट दागे, जवाब में इज़राइल ने अट्ठारह सौ रॉकेट चलाए जिससे हमास में सत्रह हजार घरों को गिरा दिया गया और करीब एक लाख लोगों को गाजा क्षेत्र से भागने पर मजबूर कर दिया।'[11] इससे ज्ञात होता है कि यदि विश्व के सभी राष्ट्र शांति और भाई चारे की जगह अस्त्र शस्त्रों को इकट्ठा करने की होड़ करते रहेंगे तो मानव मूल्यों का निरंतर पतन होता रहेगा और भविष्य में यह युद्ध एवं आपसी संघर्ष का पैमाना और बढ़ेगा, जिसकी क्षति अनुमान से 100 गुना अधिक होगी।

धर्मवीर भारती ने अपने संपूर्ण साहित्य में मानव मूल्य, सांसारिकता, राष्ट्रीय एवं सामाजिक विचारों का बड़े उत्साह से समर्थन किया है। भारती जी ने अपनी रचना 'प्रगतिवाद: एक समीक्षा' में यह स्वीकार किया है कि स्वतंत्र और सच्चा साहित्यकार अपनी भारतीय संस्कृति एवं पारंपरिक कोष को पहचान कर अपने साहित्य का सृजन करेगा। वह लिखते हैं की 'मानवता को प्यार करने वाले एक इमानदार कलाकार के नाते प्रगति मेरा ईमान है, मेरी कलम की जवानी है, लेकिन आत्मा में मैं जिस सत्य का साक्षात्कार करता हूं उसे निर्भीकता से आगे रखना मेरा कर्तव्य है।'[12] भीम द्वारा दुर्योधन से युद्ध में किया गया अन्याय ठीक उसी प्रकार है जैसे अमेरिका द्वारा जापान पर किया गया अमानुषिक बम हमला जिससे लाखों लोग प्रभावित हुए। प्रायः संपूर्ण विश्व में मानव मूल्य समान महत्व रखते हैं। यह मूल्य सामाजिक सौहार्द एवं समरसता को बनाए रखते हैं। इनके प्रचार प्रसार में साहित्य का जितना योगदान होता है उतना ही योगदान कुछ करिश्माई व्यक्तित्व जैसे-कबीर,तुलसी, सूर,नानक, मार्टिन लूथर किंग, महात्मा गांधी, नेल्सन मंडेला आदि के योगदान अविस्मरणीय हैं। यह मानव मस्तिष्क में जनकल्याण की भावना को रोपित कर जनहित हेतु प्रेरित कर के अंधे युग में प्रवेश करने से रोकने का कार्य करते हैं।

व्यक्ति चाहे सत्य के साथ रहे अथवा असत्य के साथ दोनों का अंत पीड़ादायक ही होता है। सत्य के पक्षकार ईसा मसीह को क्रॉस पर लटकाया गया। सुकरात को व्यक्ति शिक्षा एवं मानव सदाचार पर बल देने के परिणाम स्वरूप लोगों ने उस पर बच्चों को बिगाड़ने और नास्तिक होने का दोषारोपण किया और परिणाम स्वरूप उसे जहर देकर मारने का दंड दिया गया। महात्मा गांधी को सत्य और अहिंसा के मार्ग को अपनाने के कारण उन्हें गोली मारी जाती है। इन सभी घटनाओं से प्रतीत होता है कि सत्य ही पीड़ा है और इस पीड़ा को संजय ने व्यक्त किया है-

'मत छोड़ो मुझे

कर दो वध

जा कर अंधों से

सत्य कहने की

मर्मांतक पीड़ा है जो

उससे जो वध ज्यादा सुख मय है।'[13]

संदर्भ सूची

1. भारती, धर्मवीर, अंधायुग, दरियागंज- नई दिल्ली, किताब महल, संस्करण- 2015, पृ.- 2

2. पाण्डेय,रामकिंकर,शोध दिशा (शोध पत्रिका)-धर्मवीर भारती का साहित्य चिंतन (शोध पत्र),बिजनौर-उत्तर प्रदेश, श्री लक्ष्मी ऑफसेट प्रिंटर्स, शोध अंक-54, पृ.- 383,384 www.hindisahityaniketan.com

3. गौतम, सुरेश, अंधायुग: एक सृजनात्मक उपलब्धि, मालीवाड़ा- दिल्ली 6, साहित्य प्रकाशन, संस्करण:1973,पृ.36

4. भारती, धर्मवीर, अंधायुग, दरियागंज- नई दिल्ली, किताब महल, संस्करण: 2015, पृ.- 3

5. वही, पृ.- 13

6. दैनिक भास्कर, जबलपुर, 22 फरवरी 2021, पृ.- 12

7. दिनकर, रामधारी, रश्मिरथी, नयाटोला- पटना 4, श्री अजंता प्रेस लिमिटेड, संस्करण -1954,पृ.30

8. http://www.educationjournal.org

9. वर्मा, लक्ष्मीकांत, नई कविता के प्रतिमान, दरभंगा रोड - इलाहाबाद, भारती प्रेस प्रकाशन,पृ.74,75

10. भारती, धर्मवीर, अंधायुग, दरियागंज- नई दिल्ली, किताब महल, संस्करण -2015, पृ.- 84,85

11. दैनिक भास्कर, जबलपुर, संपादकीय, 26 मई 2021, पृ.- 6

12. पाण्डेय, रामकिंकर, शोध दिशा (शोध पत्रिका)-धर्मवीर भारती का साहित्य चिंतन(शोध पत्र),बिजनौर-उत्तर प्रदेश, श्री लक्ष्मी ऑफसेट प्रिंटर्स, शोध अंक-54, पृ.- 383,384 www.hindisahityaniketan.com

13. भारती, धर्मवीर, अंधायुग, दरियागंज - नई दिल्ली, किताब महल, संस्करण – 2015, पृ.- 28